

Dr. Sarita Devi
Assistant Professor
Department of Psychology
Maharaja College, Ara

मानसिक अस्पताल में नैदानिक मनोवैज्ञानिक की भूमिका (Role of Clinical Psychologist in Mental Hospital)

नैदानिक मनोवैज्ञानिक (Clinical Psychologist) मानसिक अस्पतालों में कार्य करने वाले उन विशेषज्ञों में से होते हैं जो मानसिक रोगों, भावनात्मक विकारों, और व्यवहारिक समस्याओं की पहचान, मूल्यांकन, और उपचार में मुख्य भूमिका निभाते हैं।

उनका उद्देश्य केवल रोगी के लक्षणों को कम करना नहीं होता, बल्कि व्यक्ति को मानसिक रूप से स्वस्थ, आत्मनिर्भर और समाज में पुनः समायोजित करना होता है।

1. मानसिक रोगों का मूल्यांकन और निदान (Assessment and Diagnosis)

नैदानिक मनोवैज्ञानिक विभिन्न मनोवैज्ञानिक परीक्षणों (psychological tests) के माध्यम से रोगी की मानसिक स्थिति का मूल्यांकन करते हैं, जैसे:

- बुद्धि परीक्षण (Intelligence Tests) – व्यक्ति की बौद्धिक क्षमता को मापने के लिए।
- व्यक्तित्व परीक्षण (Personality Tests) – जैसे Rorschach Inkblot Test, TAT, MMPI आदि।
- भावनात्मक और व्यवहारिक परीक्षण (Emotional & Behavioural Tests) – चिंता, अवसाद, आक्रोश आदि के मूल्यांकन के लिए।
- वे साक्षात्कार (interview) और पर्यवेक्षण (observation) के माध्यम से रोगी की समस्या का गहन विश्लेषण करते हैं।

2. मनोचिकित्सा (Psychotherapy)

नैदानिक मनोवैज्ञानिक विभिन्न प्रकार की मनोचिकित्सा तकनीकों का प्रयोग करते हैं, जैसे –

- Cognitive Behaviour Therapy (CBT) – नकारात्मक विचारों और व्यवहारों को बदलने हेतु।
- Psychoanalysis Therapy – अचेतन मन (unconscious mind) की समस्याओं को समझने के लिए।
- Behaviour Therapy – अवांछित व्यवहार को बदलने और सकारात्मक व्यवहार विकसित करने के लिए।



Edit with WPS Office

- Group Therapy – समूह में रोगियों के बीच सामूहिक बातचीत के माध्यम से भावनात्मक समर्थन प्रदान करना।
- Family Therapy – रोगी के परिवार के साथ कार्य कर पारिवारिक वातावरण को स्वस्थ बनाना।

3. परामर्श (Counselling)

- रोगियों को उनकी व्यक्तिगत, भावनात्मक, और सामाजिक समस्याओं से निपटने में सहायता करते हैं।
- आत्मविश्वास बढ़ाने, तनाव कम करने, और जीवन में सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाने के लिए मार्गदर्शन देते हैं।
- परिवार के सदस्यों को भी सलाह दी जाती है कि वे रोगी के साथ कैसा व्यवहार करें और कैसे सहयोग दें।

4. चिकित्सकीय टीम के साथ सहयोग (Collaboration with Medical Team)

- नैदानिक मनोवैज्ञानिक मनोचिकित्सक (psychiatrist), नर्स, सामाजिक कार्यकर्ता (social worker) और अन्य चिकित्सा कर्मचारियों के साथ मिलकर कार्य करते हैं।
- वे दवा उपचार (pharmacotherapy) और मनोवैज्ञानिक उपचार (psychotherapy) का संतुलित संयोजन तैयार करते हैं।
- केस कॉन्फ्रेंस (case conference) में भाग लेकर रोगी की प्रगति की समीक्षा करते हैं।

5. पुनर्वास प्रक्रिया (Rehabilitation Process)

- उपचार के बाद रोगी को समाज में पुनः सामान्य जीवन जीने के लिए तैयार किया जाता है।
- रोगी को रोजगार, सामाजिक संपर्क, और आत्मनिर्भर जीवन जीने के लिए प्रशिक्षण दिया जाता है।
- कुछ मानसिक अस्पतालों में विशेष व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम (Vocational Training Programmes) भी चलाए जाते हैं।
- पुनर्वास का लक्ष्य है – रोगी को समाज में फिर से सफल और उपयोगी नागरिक बनाना।

6. अनुसंधान और प्रशिक्षण (Research and Training)

- नैदानिक मनोवैज्ञानिक मानसिक विकारों के कारणों, उपचारों और नए तकनीकों पर अनुसंधान करते हैं।
- वे मनोविज्ञान के छात्रों और प्रशिक्षुओं को क्लिनिकल ट्रेनिंग देते हैं ताकि वे भविष्य में बेहतर मनोवैज्ञानिक बन सकें।
- अस्पताल में अनुसंधान से नई जानकारी और बेहतर उपचार विधियाँ विकसित होती हैं।



7. सामाजिक जागरूकता और मानसिक स्वास्थ्य प्रचार (Mental Health Awareness and Promotion)

- वे मानसिक स्वास्थ्य के प्रति समाज में जागरूकता फैलाते हैं।
- स्कूलों, कॉलेजों और समुदायों में मानसिक स्वास्थ्य शिविर आयोजित करते हैं।
- मानसिक रोगों से जुड़ी गलतफहमियों (stigma) को दूर करने में सहायता करते हैं।

8. नैतिक जिम्मेदारियाँ (Ethical Responsibilities)

- प्रत्येक रोगी के साथ गोपनीयता (confidentiality) बनाए रखते हैं।
- रोगी की गरिमा (dignity) और अधिकारों (rights) का सम्मान करते हैं।
- उपचार के दौरान पेशेवर आचार संहिता (professional ethics) का पालन करते हैं।

निष्कर्ष (Conclusion):

- मानसिक अस्पतालों में नैदानिक मनोवैज्ञानिक की भूमिका अत्यंत व्यापक और महत्वपूर्ण होती है।
- वे रोगी के मन, व्यवहार और जीवन के हर पहलू को समझते हुए न केवल उपचार करते हैं बल्कि व्यक्ति को आत्मनिर्भर और सामाजिक जीवन के योग्य बनाते हैं।
- उनका कार्य “रोगी को केवल बीमारी से मुक्त करना नहीं, बल्कि उसे जीवन जीना सिखाना है।”

